तब सुकराना राज का, बड़ा जो देखा इत ।
काल के मुख थें काढ़ के, राखे पनाह में साबित ॥४३॥

तब श्री राज जी महाराज की असीम कृपा के प्रताप को देखकर ये लोग मन ही मन में अपने धनी का कोटि-कोटि आभार प्रकट करने लगे कि हमारे प्राणनाथ जी ने कृपा करके मुत्यु के मुख से हमें निकाल कर अपने चरणों में सुरक्षित रख लिया है ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए बीतक बुढ़ानपुर ।
अब कहों आकोट की, राखे पनाह में ज्योंकर ॥४४॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि सुन्दरसाथ जी ! ये बुढ़ानपुर की बीतक आपसे कही है कि किस तरह से मोमिनों को श्री राजजी महाराज संकटों से बचा कर अपने चरणों में लेकर रक्षा करते हैं । अब आगे आकोट की बीतक कहते हैं ।

(प्रकरण ५५, चौ० ३०६)

सिपारे दसमें मिनें, पाने सत्ताईस मिनें बयान ।
किया मोमिनों मजकूर, सरे के सैतान ॥१॥

कुरान के दसवें सिपारे के अंदर सत्ताइसवें पन्ने में जैसा प्रसंग लिखा है, वैसा ही मोमिनों के साथ शरा के गुलाम शैतान लोगों से संघर्ष हुआ ।

मेहेतर था कीनान का, काजी सरे का जेह ।
रसूल की दावत से, मुनकर हुआ एह ॥२॥

कुरान के अनुसार कीनान का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति जो बादशाह के पास काजी था, उन्होंने रसूल द्वारा भेजे कयामत के आमंत्रण को ठुकरा कर मुनकरी की ।

जब मिला मिलावा मोमिनों, रूजू हुई सब जहान ।
दिन छठा जुमें का, हुई पहिचान ईमाम ॥३॥

जब मोमिन एक जगह इकट्ठे हो जाएंगे तब दुनियां के सभी लोग दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल होंगे । उस दिन को कुरान में छठा दिन कहा है और यह वो दिन है जिसमें मोमिनों की जागनी का कार्य पूरा होगा तथा सभी को श्री जी के रूप में ईमाम मेंहदी की पहचान होगी ।

बैठे बातां करने, जिनमें जो बीतक ।
दई साहिदी मोमिनों, गुझ खिलवत जहूर हक ॥४॥

सुन्दर साथ परस्पर चर्चा करने बैठे । सबने अपना अपना बीता हाल कहा । अपने मूल स्वरूप को याद कर परमधाम के मूल मिलावे में श्री राज महाराज के साथ हुए इश्क रब्द की चर्चा पर प्रकाश डाला। अपने अनुभव के अनुसार मोमिनों ने गवाही देते हुए खिलवत की गुझ बातों को जाहिर किया ।

Nijanand App

तब काजी हुआ मुनकर, मोसों नहीं मजकूर ।
रूबरू ए मोमिनों, सब बोलत झूठा जहूर ॥५॥

इस प्रसंग को सुनकर कीनान का वह काजी विमुख हो गया और वह बोला मेरे साथ हक की कोई बात नहीं हुई आप मेरे सामने यह बातें बिल्कुल झूट कह रहे हो ।

सबों ने दई लानत, सरे के सैतान ।
दुनियां में जाहिर भई, इन मारी राह सुभान ॥६॥

सब मोमिनों ने काजी के विचार सुन कर उस शरीयत के गुलाम शैतान शेख इसलाम को धिक्कारा। ऐसे ही धर्म विरोधी लोगों ने परमात्मा से मिलने वाले को रास्ते से भटकाने का प्रयास किया ।

तो सरे के सैतान पर, सब को हुई लानत ।
हमको लेने न दई, हकीकत जो मारफत ॥७॥

इसलिए सभी लोगों ने औरंगजेब और उसके दरबारी काजी मुल्लाओं को धिक्कारा और कहा कि इन पापी लोगों ने ही दज्जाल अबलीस का काम करके हमको परमधाम की हकीकत और मारफत का ज्ञान नहीं लेने दिया । जिससे हम अल्लाह ताला की पहचान कर लेते ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए लिखा बीच फुरमान ।
मोहर करी दिल आंख पर, और जुबान कान कुफरान ॥८॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि मोमिनों ! यह प्रसंग कुरान में लिखा है । ऐसे शरीयत के गुलाम, खुदा के पैगाम से मुनकर होने वाले लोगों के दिल और आंख पर मोहर लिखी है । इनको सत्य वस्तु दिखाई ही नहीं देती और न ही वह उस पर विचार कर पाते हैं और हमेशा कुफर (झूठ) ही सुनते हैं और झूट ही बोलते हैं ।

(प्र० ५६ / चौ० ३०७०)

बुढ़ानपुर से आकोट, तहां रहे महिने चार ।
खबर लई सब साथ की, करने लगे विचार ॥१॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं ए सुन्दर साथ जी ! बुढ़ानपुर से चलकर आकोट आए। वहां पर चार महीने रह कर जागनी का कार्य किया । सब स्थानों के सुन्दरसाथ का समाचार मंगाया और अब आगे चलने का विचार विमर्श किया ।

एक लिखी फतूअल्ला पर, रहे बीच औरंगाबाद ।
तिनको सवाल कुरान के, लिख भेजे हैं आद ॥२॥

औरंगाबाद में रहने वाले फतेहउल्ला को पत्र लिखा । उसमें उनको कुरान के शुरू के मूल प्रश्न ''अलिफ लाम मीम'' के अर्थ पूछे ।

Nijanand App

और हकीकत लिखी, तुम लड़ने बांधी कमर ।
होत एक दीन महम्मदी, तुम आड़े भए इन पर ॥३॥

कुरान की सब हकीकत लिखकर बताते हुए उसे लिखा आप हमसे पहले भी सघंर्ष करने के लिए तैयार हुए थे । नहीं तो सब संसार मुहम्मद साहब के दीने इसलाम निजानंद संप्रदाय को मानने लग जाता पर तुम ही विरोधी हो कर आड़े आ गए ।

आवते थे इसलाम में, तिन मारी सबन की राह ।
बिन समझे बातें करी, दुसमन हुए खुदाए ॥४॥

और जो लोग चर्चा सुन कर दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हो रहे थे । तुमने उनको भी गुमराह कर दिया । बिना सोचे तुमने ऐसी बातें की कि तुम खुद ही खुदा के दुश्मन बन बैठे ।

अब सवाल पठाए हैं, तिनको दीजो जवाब ।
जो पढ़े तुम आरफ हो, तो कहो इनके बाब ॥५॥

अब हम आपको प्रश्न भेज रहे हैं उनका उत्तर अवश्य देना । यदि तुम कुरान के आलिम फाजिल हो और कुरान की हकीकत को जानते हो तो इन सवालों का जवाब अवश्य देना ।

हम आवत है दीन में, हमको करो मुसलमान ।
दीन महम्मद के दाखिल करो, होए तुमारे गुलाम सुने कान ॥६॥

अगर आप हमारे सवालों का जवाब दे दोगे तो हम आपके मुसलमान धर्म में शामिल हो जाएंगे । फिर तुम्हारे दास होकर हम तुमसे चर्चा सुनेंगे ।

हमको समझाओ तुम, रब्बानी कलाम ।
जो लिखा सो सब करें, करो दाखिल बीच इसलाम ॥७॥

कुरान में लिखी अल्लाह तआला की वाणी को आप हमारे प्रश्नों के अनुसार समझाओ । जैसा आप पत्र में लिखकर भेजोगे, उसी के अनुसार हम कार्य करेंगे और आप हमें अपने इसलाम धर्म में दाखिल कर लो ।

तब तोड़ी तुम को, खाना पीना हराम ।
जोलों हमारी निसां ना भई, तोलों जिन करो कोई काम ॥८॥

जब तक हमारे प्रश्नों का उत्तर देकर हमारी तसल्ली न करा दोगे तब तक आप कोई अन्य कार्य न कर सकोगे और आपको तब तक खाना पीना हराम होगा ।

Nijanand App

हम लाखों कबीले हिन्दुअन के, होत दाखिल दीन इसलाम ।
एह काम छोड़ के, कहा करो इस ठाम ॥९॥

हम हिन्दुओं के लाखो परिवार हकीकी दीने इसलाम में आने को तैयार हैं इसलिए दीने इसलाम के इस खास काम को छोड़ कर इस फानी दुनियां में बैठे आप क्या कर रहे हैं ।

जो सिफत कुरान में, लिखी नाजी फिरके की ।
जो तुम हो उन में, तो कहो खबर वही उतरी ॥१०॥

कुरान में नाजी फिरके की जो सिफत लिखी है । यदि आप उनमें से हो, आखिरत के वक्त में नाजी फिरके के लिए ही अर्शे अजीम का इलम उतरना लिखा है, तो उसके बारे में हमें समझाओ ।

जो रूहें दरगाह मिनें, कही महम्मद बारे हजार ।
जो तुम हो तिन में, तो करो हमको खबरदार ॥११॥

अर्शे अजीम के मूल मिलावे में अल्लाह तआला के कदमों में १२००० रूहें बैठी हैं । अगर आप उनमें से हो तो आप उनकी पहचान कराते हुए हमें समझाओ ।

जिन रूहों का मरातबा, लिखा अमेत सालून ।
तिन मानंद कोई नहीं, तुम देओ जवाब हो कौन ॥१२॥

अमेत सालून सिपारे में रूहों (मोमिनों) का बहुत बड़ा मरातबा लिखा है । उनके समान और कोई महान नहीं है । आप उत्तर देने की कृपा करें कि आप कौन हो ?

मोमिन नूर बिलंद से, उतरे दुनियां में ।
जो तुम हो उन कौम में, तो करो जवाब हम सों ॥१३॥

रूहें नूर बिलंद अर्शे अजीम से दुनियां में उतरी हैं । अगर आप उनमें से हो तो आप अपनी पहचान देकर हमें उत्तर दो ।

बीच नसारों के गिरोह में, लाहूत का निसान ।
जो तुम हो तिन में, तो कर देओ हमें पहिचान ॥१४॥

ईसाईयों के धर्म-ग्रन्थ बाईबिल में मोक्ष धाम का ब्यान लाहूत के नाम से लिखा है । यदि तुम वहां के रहने वाले हो तो हमें अपनी जानकारी देने की कृपा करो ।

Nijanand App

जो लिखी सिफत यहूदन की, बीच अल्ला कलाम ।
जिन बीच में महम्मद, करे पातसाही तमाम ॥१५॥

कुराने-पाक में जिन यहूदियों (हिन्दुओं) की ऐसी तारीफ लिखी है कि भविष्य में वही लोग अल्लाह को मानेंगे और महंमद साहब उनमें ही उतरेंगे और महंमद साहब उनमें ही अपने दीने इसलाम की स्थापना करेंगे । यदि तुम उन यहूदियों में से हो तो हमें बताओ ।

जो तुम हो तिन में, तो हमको देओ खबर ।
गिरोह बनी असराईल की, जो है सब ऊपर ॥१६॥

और कुराने-पाक में बनी असराईल की जमात ही (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्र जी की जमात ही) सबसे महान लिखी है । अगर आप उनमें से हैं तो अपनी पहचान हमें लिखो ।

जो तुम हो उन में, तो कर देओ हमें पहिचान ।
बांध्या बनी असराईलें, कयामत का निसान ॥१७॥

कयामत के समय १००० महीने के अनुसार बनी असराईल (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्र जी) ने ८३ वर्ष ४ महीने ईमाम मेंहदी साहब के संदेश को दुनियां में फैलाने का लक्ष्य बनाकर कार्य किया है, ऐसा लिखा है । अगर तुम अपने आपको उस जमात में से मानते हो तो अपनी पहचान कराइए ।

जो तुम हो तिन में, सो निसां करो तुम ।
जो जवाब न आवे तुम को, तो बताये देवें हम ॥१८॥

अगर ऊपर कही गई किसी भी जमात में तुम हो तो लिखकर हमारी तसल्ली कराओ । अगर तुमको इन सब का जवाब नहीं आता तो हम इन सवालों का जवाब देंगे ।

इन भांत के निसान, लिख भेजे उन ऊपर ।
जवाब न आवे तिन को, सरमिंदे हुए योंकर ॥१९॥

इस तरह के सवाल लिख कर फतेहउल्ला को औरंगाबाद में पत्र लिख भेजा । वह एक भी सवाल का जवाब नहीं दे सके और बहुत शर्मिन्दा हुए ।

यों ही एक लिखा काजी पर, हिदा तुल्ला जाको नाम ।
एक लिखा अमानत खां दीवान पर, रूक्का बहादुर खान इस ठाम ॥२०॥

और इन्हीं सवालों की नकल का एक पत्र औरंगाबाद में काजी हिदायतउल्ला के नाम, दूसरा अमानत खां के नाम और तीसरा बहादुर खां के नाम लिख भेजा ।

Nijanand App

यों बैठ के आकोट में, पोहोंचाए पैगाम ।
पर दिल मुरदे न पावहीं, पहिचान दीन इसलाम ॥२१॥

इस तरह आकोट में बैठ कर सभी प्रमुख लोगों के पास ईमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के जाहिर होने का संदेश औरंगाबाद पहुंचाया लेकिन जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान के बिना संसार के लोगों का मन झूटी दुनियां में फंस कर मुर्दे के समान हो गया है । ऐसे लोग दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय की हकीकत को नहीं समझ सकते ।

इहाँ भाई से भाग के, आया अब्बल खान ।
रह न सके माया मिने, जाको हक पहिचान ॥२२॥

श्री जी का पता लगने पर अव्वल खां अपने भाइयों से अलग होकर भाग कर आकोट में आ गया। उसे ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की पहचान हो गई थी । इस दुनियां में जिसको अपने धनी श्री प्राणनाथ जी की पहचान हो जायेगी वह फिर झूटी दुनियां में उनके बिना नहीं रह सकता ।

बोहोत दिलासा करी, बीच तरीकत इसलाम ।
तुमको दुनिया न लगे, हम जब बैठें एक ठाम ॥२३॥

श्री जी ने अव्वल खां को धैर्य बंधाया और उसे परमधाम की चितवन का ज्ञान समझाया और उससे कहा तुम्हें यह झूटी माया अपने में न भटका सकेगी । जितने दिन दुनियां में रहो, अपने धनी का चिन्तन करते रहो और जब हम अपना एक ठिकाना बना लेंगे (पन्ना जी में झंडा गाढ़ लेंगे) ।

तब तुमें बुलावेंगे, जिन तुम होवो दलगीर ।
तुम हमारी आत्मा, सांचे तुम सूर धीर ॥२४॥

श्री जी ने कहा तब हम आपको अवश्य बुला लेंगे । तुम निराश मत होओ । तुम तो हमारे परमधाम के एक साथी हो और धैर्यवान सच्चे मोमिन हो । तुम्हारा झूटी दुनियां क्या करेगी ।

तुम चार दिन रहो भाइयों भेले, अब रोसन होत है काम ।
तुम बैठे अरस अजीम में, निज वतन जो धाम ॥२५॥

आप बड़े धैर्य के साथ कुछ दिन अपने भाईयों में रहो । अब शीघ्र ही ब्रह्मसृष्टि की जागनी का काम जाहिर हो जायेगा । तुम्हारी परआतम परमधाम में बैठी है । वही अपना सच्चा घर है ।

आकोट के चौधरी, ताको भई पहिचान ।
ज्यों लौकिक गुरू मानिए, इतना था ईमान ॥२६॥

आकोट के चौधरी को श्री जी की चर्चा सुनने के बाद पहचान हो गई और जाग्रत बुद्ध तारतम ज्ञान की चर्चा सुनने से उसकी आतम जाग्रत हो गई पर सांसारिक गुरू मान कर जैसी सेवा की जाती है उतना ही उसने श्री जी का सत्कार किया । उसका उतना ही ईमान था ।

Nijanand App

बार दो चार अपने घर, बुलाए करी मनुहार ।
अरूगाए भली भाँत सों, कर आचार विचार ॥२७॥

दो-चार बार उसने श्री जी को सुन्दर साथ सहित अपने घर बुला कर रसोई उच्छव किया । बड़ी पवित्रता के साथ आचार व्यवहार का ध्यान रख कर अच्छी तरह से सेवा की और श्री जी व सुन्दरसाथ को आरोगाया।

साथ सबको बुलाए, प्रसाद लेवे को ।
साथ राज के संग, बैठाए कबीले मों ॥२८॥

श्री जी व सब सुन्दरसाथ को भोजन कराने के लिए आदर सत्कार के साथ बुलाया और अपने कबीले में विठा कर सुन्दर साथ के साथ उसने भी प्रसाद लिया यह सेवा कर उसने अपने को धन-धन माना ।

चरचा किरंतन सेवा को, लियो सुख माफक अंकूर ।
तहां रहे तिन माफक, उत तैसा हुआ मजकूर ॥२९॥

अपने अंकूर के माफक चौधरी ने चर्चा, किरंतन और सेवा करके सुख लिया । अपनी इच्छानुसार आकोट में ठहर कर श्रीजी ने तारतम वाणी से जागनी का कार्य किया ।

उत आया एक ब्राह्मण, सुनने को चरचा ।
परगने बराड़ के, हाकिम का गुमास्ता ॥३०॥

एक ब्राह्मण आकोट में श्री जी की चर्चा सुनने की इच्छा से आया । वह बराड़, परगना (तहसील के) अधिकारी का गुमास्ता (चपरासी) था ।

तिन सुनी चरचा कबीर की, लगे कलेजे घाव ।
खुल्या द्वार हकीकत का, ऐसा लगा आए दाव ॥३१॥

जब उसने श्री जी की रसमयी चरचा में कबीर की चर्चा सुनी तो उसके दिल में बहुत चोट लगी । उसने ऐसा अनुभव किया जैसे आतम जाग्रत हो गई हो वह अक्षर ब्रह्म के धाम को अनुभव कर रहा हो।

भूल गया सरीर को, नजर पहुंची बका में ।
और सान कछू न रही, हुआ सब तुमही सें ॥३२॥

उसे अपने शरीर की सुध नही रही और उसकी सुरता अक्षर धाम पहुंच गई और उसी में मग्न होकर वह कहने लगा तुम ही तुम हो । तुम ही तुम हो । सब करने वाले तुम ही हो ।

Nijanand App

घरों जाए पीछे फिरे, ज्यों ताना कोरी के ।
आवें जाए फिर फिर फिरे, नजर भई इनें ए ॥३३॥

वह ब्राह्मण वहां से अपने घर वापिस तो गया किन्तु तुरन्त श्री जी के चरणों में आ गया । इसी तरह से वह बार-बार आता-जाता (जैसे खादी बुनने वाला जुलाहा एक खूंट से दूसरे खूंट तक घुमाता है), उसकी हालत भी ताने की कोरी के समान होगई । इसकी दृष्टि अक्षर धाम में लग चुकी थी ।

जो बात कहे उनको, तो कहे तुमही हो तुम ।
और न मुंह से काढ़हीं, तुम पे आए हम ॥३४॥

यदि कोई उससे कोई बात पूछता है तो केवल तुम ही तुम हो ! तुम ही तुम हो कहता है । अपने मुख से वह और कुछ कहता ही नहीं । कभी कहता है तो यही कहता है मैं आपकी शरण में आया हूं।

जो चरचा कर समझाइये, तो बोल न निकसे और ।
चित उनका लगा, मूल अक्षर के ठौर ॥३५॥

समझाने के लिए उससे किसी बात की चर्चा की जाती तो उसके मुख से और कोई शब्द नहीं निकलता था । वह सुन कर चुप रह जाता उसकी सुरता अक्षर धाम में टिक गई ।

पीछे फिरता ही रहे, समें प्रात के नदी पार ।
श्री राज दातौन करत हैं, पैठा नदी में हुसियार ॥३६॥

श्री जी प्रातः नदी के पार दातौन के लिए आते तो वह उस समय दूसरे किनारे पर उनके सामने फिरता रहता है । एकाग्रचित होकर उन्हें देखते-देखते नदी में घुस गया ।

समेत कपड़े चला गया, गिर पड़ा बीच में ।
सुध न सान सरीर की, गिरी पाग उतर उन सें ॥३७॥

अपने ध्यान में मग्न वह वस्त्रों सहित नदी के बीच गिर पड़ा । उसे अपने शरीर की भी सुध नहीं रही। उसके गिरते ही उसकी पगड़ी नदी में तैरने लगी ।

पैठे साथी दौड़ के, निकाला नदी से ।
कपड़े सुखाए पहिनाए, कछू सुध न रही इने ॥३८॥

सुन्दरसाथ, जो श्री जी के पास बैठे थे, दौड़ कर नदी में कूद पड़े । उसे नदी से बाहर निकाला गीले कपड़े उतार कर सुखाये और पुनः उसे कुछ पता नहीं चला ।

Nijanand App

पूछा उनें रसोई का, कहया चौका भए दिन तीन ।
मैं जानत नहीं कछुए, ए लोगों कहया आकीन ॥३९॥

उससे पूछा गया कि तुमने भोजन कर लिया है तो उसने कहा मुझे कुछ याद नहीं । आपस में लोगों ने कहा हमें विश्वास है इसने तीन दिन से भोजन नहीं किया ।

ए भांत इनका फेर, पीछा हटाया चित ।
फिराया फिरे नहीं, उनके भाई बुलाए इत ॥४०॥

श्री जी ने उसके ध्यान को वापिस अक्षरधाम से संसार की ओर हटाया । उसे बहुत समझाया पर फिराने पर भी उसकी सुरता वापिस नहीं आई । तब श्री जी ने उसके भाइयों को बुलाया ।

डोली में बैठाए के, पहुंचाया अपने ठौर ।
अंकूर माफक उन लिया, पावे न ज्यादा और ॥४१॥

और उसका धामगमन हो गया । उसके भाई उसकी डोली (अर्थी) को ले गए । उसका संस्कार कर दिया । अपने अंकूर माफक उसने सुख लिया ।

सुकदेव ब्राह्मण था, मुलक उदेयपुर का ।
आतम सौंपी कदमों, अंकूर जेता तेता सुख लिया ॥४२॥

एक सुकदेव ब्राह्मण उदयपुर का रहने वाला था । वो यहां आकोट में आया । चर्चा सुनने से श्री जी के चरणों में समर्पित हुआ । अपने अंकूर माफक उसने भी सुख लिया ।

फेर उहां से चले, आए कापस्तानी ।
तहां बैठ चरचा करी, गिरोह जान अपनी ॥४३॥

अब आकोट से चल कर श्री जी सब सुन्दरसाथ के साथ कापस्तानी आए । वहां अपने सुन्दरसाथ के बीच बैठ कर अखंड परमधाम की चर्चा होने लगी ।

तहां ईमान ल्याइया, दगड़ा और दत्ता ।
अमराजी आइया, सुन थोड़ी सी चरचा ॥४४॥

कापस्तानी गांव में दगड़ा, दत्ता और अमरा जी ने थोड़ी सी चर्चा सुनकर तारतम लिया और सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

और कुटुंब कबीला अपना, ल्याया बीच दीन ।
तामे अमराजी रह गया, जिनका बका आकीन ॥४५॥

वह अपने परिवार सहित सुन्दरसाथ में शामिल हुए । उनका परमधाम और धाम धनी श्री प्राणनाथ जी पर पूरा विश्वास हो गया । अमरा जी सुन्दरसाथ में शामिल नहीं हो सके ।

Nijanand App

फेर दिन दस पांच रह के, आए एलचपुर पोंहोंचे ।
तहां एक परसाजी ने, खिजमत करी ए ॥४६॥

फिर कापस्तानी में पांच-दस दिन रहने के बाद श्री जी एलचपुर पहुंचे । वहां एक परसा जी भाई रहता था । उसने सब सुन्दरसाथ व श्री जी की बहुत सेवा की ।

जो तुम इते रहो, तो मैं सेवों तुमें ।
ज्वारी मेरे बहुत हैं, मैं सेवा करों तिन सें ॥४७॥

परसा जी ने श्री जी से कहा कि श्री जी यदि आप यहीं रह जाओ तो मैं आपकी बहुत सेवा करूंगा। इस वर्ष आपकी कृपादृष्टि से मेरी जवारी (मक्का) की फसल बहुत हुई है । उसके ढोढे (रोटले) बना-बना कर पालक के साग के साथ घी डाल कर खिलाऊंगा ।

तीन चार दिन सेवा करी, उच्छव रसोई ।
फेर तहां से चले, केतिक मजलें राह में भई ॥४८॥

तीन चार दिन तक बड़े प्रेम भाव के साथ उसने खूब रसोई - उच्छव कर सेवा का अखंड सुख लिया। एलचपुर से श्री जी सुन्दरसाथ के साथ चले । रास्ते में कई स्थानों पर पड़ाव डालना पड़ा ।

मिला फकीर संग का, तिन साखियां दे करी सेव ।
सुन चरचा गलित भया, पाया नहीं भेव ॥४९॥

राह चलते हुए एक फकीर साधु से भेंट हो गई । उसने कुछ कबीर की साखियां दे कर श्री जी की सेवा की । धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के मुख से अखंड धाम की चर्चा सुन कर बहुत प्रभावित हुआ परन्तु हकीकत और मारफत के भेदों को नहीं समझ सका ।

तहाँ से आए देवगढ़, तहाँ रहे दिन चार ।
राम टेक का राजा था, तहां किया ना किन विचार ॥५०॥

एलचपुर से चल कर स्वामी जी देवगढ़ पहुंचे । वहां चार दिन ठहरे । रामटेकरी के राजा ने श्री जी के सन्देश पर ध्यान नहीं दिया । इसलिए वहां की जनता ने भी श्री जी की चर्चा पर कोई विचार नहीं किया।

उहां से चलके, आए राम नगर ।
भई मजलें दरम्यान में, ए सुख सब ऊपर ॥५१॥

देवगढ़ से चल कर सुन्दरसाथ सहित श्री जी राम नगर आए । यहां तक आने में अनेकों स्थानों पर ठहरना पड़ा । कई पड़ाव आए । उन स्थानों पर रूक-रूक कर आगे बढ़े और तारतम वाणी की चर्चा से जागनी की । ऐसा अखंड सुख इस से बढ़ कर और कहां मिलेगा ।

Nijanand App

एक समद घोड़ा, असवारी को हाजर ।
श्री राज तापर विराजत, संग मोमिनों का लसगर ॥५२॥

आप श्री जी के लिए एक सफेद रंग का अच्छी नसल का घोड़ा था । उसी पर श्री जी विराजमान होते थे और संग-संग मोमिनों का लश्कर उसी प्रकार चल रहा था जैसे राजा के साथ सेना चलती हो ।

तहां मांगत टूंका चलहीं, झोरी भर ल्यावें ।
श्री राज को अरूगाए के, साथ को बांट देवें ॥५३॥

सभी सुन्दरसाथ फकीरी भेष धारण किए हुए चलते थे और रास्ते में घर-घर से रोटी के टुकड़े मांग कर झोलियों में भर-भर कर लाते थे । श्री जी को आरोगवा कर बाकी सब सुन्दरसाथ बांट कर प्रशाद ले लेते थे ।

सब साज फकीरी का, सोभित सब सनंध ।
मोमिनों भेख पहिचानिया, क्या पहिचाने अंध ॥५४॥

सभी सुन्दरसाथ और श्री जी फकीरी भेष में शोभायमान थे । इस फकीरी भेष को सुन्दरसाथ ने पहचान कर धारण किया था । संसार के अंधे लोग इस फकीरी के रहस्य को क्या समझें ?

एक लड़ाई राह में, दज्जालें करी दरम्यान ।
भई गोंडों के गांव मिने, करी बिन पहिचान ॥५५॥

रामनगर आते समय श्री जी को गोंडों के गांव में ठहरना पड़ा किन्तु उन गोंडों के मन में बेईमानी आ गई । श्री जी के स्वरूप की पहचान न कर सके । उन्होंने उपद्रव किया जहां सुन्दरसाथ को संघर्ष करना पड़ा ।

रामनगर आए पहुंचे, रहे केतकी पर ।
तहां अस्तल बनाए के, गणेस महन्त के बराबर ॥५६॥

इस तरह से अपनी आत्मा को जगाने का कार्य करते हुए सुन्दरसाथ के साथ रामनगर आकर केतकी नदी के पास डेरा लगाया । सब सुन्दरसाथ ने मिलकर श्री जी के ठहरने के लिए स्थान बनाया । वह स्थान वहां के गणेश महन्त के मंदिर के समान ही था ।

पहिले आए छतई मिले, अपने कबीले समेत ।
और आया सुकई, और चूरामन इत ॥५७॥

सबसे पहले चूरामन, सुकई और छतई आकर अपने कबीले समेत मिले । श्री जी की वाणी सुन कर चरणों में समर्पित हुए और सुन्दरसाथ में शामिल हो गए ।

Nijanand App

और कुंजा वीर जी, और राम रतन ।
और गंगा सन्ता बेटी, कुसल्या जातमाल मोमिन ॥५८॥

कुंजा भाई, वीर जी भाई, राम रतन और गंगा, सन्ता बेटी तथा कौशल्या बाई, माली जाति की थी, यह सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

और सूरत आइया, अपने तन मन धन ।
और देवकी नन्दन ईमान से, और स्तुति देत श्रवन ॥५९॥

सूरत सिंह अपने तन, मन, धन सहित श्री जी के चरणों में समर्पित हुआ । देवकी नन्दन भी सुन्दरसाथ में शामिल हुए । वह बड़े ध्यान पूर्वक चर्चा सुना करते थे ।

और जगन्नाथ जातमाल, ए आए एचदे से ।
मकरन्द दास जातमाल, और कबीला दाखिल इनमें ॥६०॥

एचदे गांव से जगन्नाथ माली सब कुछ छोड़ कर श्री जी के चरणों में आ गए । मकरन्द दास माली अपने परिवार सहित सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

गोकल दास जातमाल, ले कबीला समेत ।
और सुन्दर दास आए, ईमान मुख कहत ॥६१॥

गोकुल दास माली भी अपने परिवार सहित चर्चा सुन कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए । सुन्दरदास के भी दिल में श्री जी के प्रति विश्वास आया । वह अपने ईमान का बखान अपने मुख से किया करता था। वह भी तारतम ले कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

जयंतीदास जातमाल, और कबीला ल्याया ।
फेर पीछे से बुलाया, पहिले आपको ईमान आया ॥६२॥

जयन्तीदास माली पहले खुद श्री जी के चरणों में समर्पित हुआ । बाद में कुटुम्ब कबीले समेत सुन्दरसाथ में शामिल हुआ ।

और हरि राम भाई, और लड़ेती आई ।
चन्दा ईमान ल्याए के, कबीला पीछे ल्याई ॥६३॥

हरी राम भाई और लड़ेती बाई निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए । चंदाबाई को श्री जी पर ईमान आया और बाद में अपने परिवार को लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हुई ।

Nijanand App

और आया सुन्दर, था नानक पन्थ में ।
और ननियां आई, बाई लाली आस इन सें ॥६४॥

नानक पंथी सुन्दर दास, नानिया बाई और लाली बाई ने श्री जी की चर्चा को सुन कर आतम का सुख लिया और निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हो गए ।

और मूसे खां पठान, आया बुढ़ानपुर से ।
ईमान ल्याए घर गया, रहया कबीले में ॥६५॥

बुढ़ानपुर से मूसे खां पठान आया । श्री जी की चर्चा सुनकर ईमान ले आया । जब वह वापिस घर गया तो माया में ही रह गया ।

और रंचो बढ़ई, जयंति काके उपली पहिचान ।
आवत है दीदार को, ले दिल में ईमान ॥६६॥

रंचो बाई बढ़ई और जयंती काका दर्शन करने ईमान से आते हैं । पर उनको अभी ऊपरी पहचान हुई । श्री जी के स्वरूप को नहीं पहचाना ।

मुरलीधर राह में, सुनके ए ल्याए ईमान ।
उनको असल अंकूर की, उतहीं हुई पहिचान ॥६७॥

मुरलीधर भाई ने श्री जी की चर्चा राह में सुनी थी । परमधाम का असल अंकूर होने के कारण से वहीं पर उसको पहचान लिया कि यह परमधाम की आतम है ।

कानजी आहेड़ का, सो गया एचदे में ।
गोकुलदास मकरन्द को, आए इसलाम तारतम सुनके ॥६८॥

कान्ह जी भाई आहेड़ के निवासी थे । कान्ह जी भाई यहां से एचदे चले गए । गोकुलदास और मकरन्द भाई ने तारतम ज्ञान की चर्चा सुन कर श्री राजजी महाराज और परमधाम की पहचान करके तारतम लिया। वह सुन्दर साथ में शामिल हो गए ।

कौसल्या ने सुनी, और देमां मथुरी ।
और श्री राम राजाराम, और भागो भाग भरी ॥६९॥

कौशल्या, देमांबाई, मथुरी बाई, श्री राम, राजा राम, भागो बाई जैसे भाग्यवान सुन्दरसाथ का श्री जी के चरणों में पूरा यकीन था ।

Nijanand App

राजू और भंडारिन, और राई कुंवर ।
इनों सुन्या तारतम, देखा पटन्तर ॥७०॥

राजूभाई, भंडारिन, राई कुंवर आदि ने श्री जी से तारतम ज्ञान की चर्चा सुनी तो उनको संसार और परमधाम के अंतर का ज्ञान हुआ ।

हिमोती और खेमाबाई, और आसबाई ।
संभू और मन्ना, और राम कुंअर आई ॥७१॥

हिमोती बाई, खेमा बाई, आसबाई, संभू भाई और मन्ना भाई तथा राम कुंवर श्री जी की आलौकिक चर्चा सुनकर चरणों में समर्पित हुए ।

जीवनदास और नवलदास, और आए भाई कल्यान ।
और महासिंह चौधरी, और दौलत खां पठान ॥७२॥

जीवनदास, नवलदास, कल्याण भाई, महासिंह चौधरी और दौलत खां पठान इन सब ने श्री जी की चर्चा सुनी । आतम जागृत होने पर तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हो गए ।

और पूरन नाऊ, और आसा राम ।
और एक आसा लल्लू, और परसराम ॥७३॥

पूरन नाई, आसा राम, आसा लल्लू और परशुराम इन्होंने भी चर्चा सुनकर तारतम लिया और सुन्दर साथ में शामिल हो गए ।

और आए सेख खिदर, और अब्दुल रेहेमान ।
और भिखारी दास, ले कबीले समेत ईमान ॥७४॥

शेख खिदर, अब्दुल रहमान, भिखारी दास अपने परिवार सहित श्री जी के स्वरूप की पहचान कर सुन्दरसाथ में शामिल हो गए ।

और आए भाई रघुनाथ, कबीला इनका आया ।
ए रामनगर की मजल, ए तो हिस्से माफक सुख पाया ॥७५॥

रघुनाथ भाई ने अपने कबीले सहित आ कर तारतम लिया । इन सब सुन्दर साथ की आतम जागृत रामनगर में हुई । सबने अपने अंकूर अनुसार सुख लिया ।

और बुढ़ानपुर से, आया बृन्दावन ।
और नारायन दास, और बराड़ का साथ मोमिन ॥७६॥

बुढ़ानपुर से बृन्दावन भाई रामनगर आए और नारायण दास तथा बराड़ के सुन्दरसाथ भी यहां पहुंचे।

Nijanand App

लच्छीदास खेमकरन, और आया कंनड़ जे ।
और हरकृष्ण सुकदेव, और गिरधर बेकैद ऐ ॥७७॥

लच्छीदास, खेमकरन भाई, कन्नड़ भाई, हरिकृष्ण, शुकदेव और गिरधर श्री जी की चर्चा सुन कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए । इनके सांसारिक बन्धन टूट गए ।

और खरगो माता उनकी, और आए जगरूप ।
चरचा सुनत श्री राज की, सुन्दर रूप अनूप ॥७८॥

और उनके माता जी खड़गो बाई, जगरूप भाई श्री जी के मुखारविन्द से श्री राज जी महाराज के सुन्दर सरूप की चर्चा को सुन कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

और आया रामनगर में, ए जो गंगा राम ।
और जो आया बदले, उन पाया आराम ॥७९॥

गंगा राम और बदले भाई राम नगर में आकर सुन्दरसाथ में शामिल हुए । इन्होंने श्री जी की चर्चा सुन कर आत्मिक सुख लिया ।

पतिराम मोदी, और केसवदास ।
और बल्लभदास संग, और मनिया खास ॥८०॥

पतिराम मोदी, केशवदास, वल्लभ भाई और इनके संग मनिया बाई श्री जी की चर्चा सुन कर सुन्दरसाथ में शामिल हुई ।

और गिरधर बसन्त, और दयाल हसन ।
और बिहारी फरास, और बिहारी रोसन ॥८१॥

एक और गिरधर भाई, बसन्त भाई, दयाल, हसन, बिहारी फराश और दूसरे बिहारी भाई इनकी भी आत्मा जागृत हो गई और सुन्दरसाथ में शामिल हो गए ।

और गिरधर दरजी, और सूरज मल ।
और गोविन्द राए ईमान, और लालमन निरमल ॥८२॥

गिरधर दर्जी, सूरजमल, गोविन्द राए और लालमन भाई और निर्मल दास श्री जी के चरणों पर समर्पित हुए ।

और देवराम, और पहाड़ी जाको नाम ।
माता खेमकरन की, आई जातमाल के काम ॥८३॥

देवराम भाई पहाड़ी, चर्चा सुन कर जागृत हुए । खेमकरण की माता जो माली का काम करती थी, वह भी सुन्दरसाथ में शामिल हुई ।

Nijanand App

और देवी दास आइया, और आए भगवान ।
सिद्धपुर पाटन से, दामोदर परवान ॥८४॥

देवीदास और भगवान दास आत्म ज्ञान की चर्चा सुन कर श्री जी के चरणों में समर्पित हुए और सिद्धपुर पाटन से दामोदर भाई यहां आए ।

और तिवारी उदई, थी लौकिक पहिचान ।
श्री राज को घरों पधराए के, रसोई कराई प्रमान ॥८५॥

उदई तिवारी को श्री जी का फकीरी भेष देखकर श्रद्धा उत्पन्न हो गई । श्री जी को सुन्दर साथ सहित अपने घर पधराया और रसोई उच्छव किया ।

चांद खान आइया, चरचा सुनने को ।
दौड़ता ईमान को, रहा रामनगर मों ॥८६॥

श्री जी की चर्चा सुनने के लिए चांद खान आते थे । श्री जी के स्वरूप की पहचान करने के लिए बहुत प्रयत्न किया और वह रामनगर में ही रहने लग गया ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए कही रामनगर की तुम ।
और आगे अजूं बहुत, कहों हक के हुकम ॥८७॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि - हे सुन्दरसाथ जी ! यह रामनगर की कुछ बीतक आपसे कही है । अभी कुछ और बाकी है वह भी आपसे कहते हैं ।

(प्रकरण ५७; चौपाई ३१५७)

ए बात हरिसिंह सुनी, करने आया दीदार ।
सुजान साह की सोहोबत, किया सूरत सिंह खबरदार ॥१॥

सूरतसिंह ने सुजान शाह को श्री जी के राम नगर में आने की पहचान करा कर सावचेत किया । यह बात सुनकर हरिसिंह सुजान सिंह के साथ दर्शन करने आए ।

सुनी चरचा आए के, बोहोत हुआ खुसाल ।
घरों जाए न्योता किया, खबर पोहोंचाई हाल ॥२॥

वे श्री जी के मुखारबिन्द की चर्चा सुनकर बड़े प्रसन्न हुए । घर वापिस पहुंचकर उन्होंने स्वामी जी और सब सुंदरसाथ को रसोई का निमंत्रण देने का विचार किया और आकर चरणों में प्रार्थना की ।

Nijanand App